

बारिश की एक साँझ

दिन भर बारिश होती रही थीं चारों ओर पानी के बहने, हवा के झोंको और कीड़े-मकोड़ों की आवाजें थीं बहुत कुछ पानी में डूब गया था-खेतों की मिट्टी घास का मैदान, यहां तक कि बहुत से जीव-जंतुओं के रास्ते भी

छोटू साँप का रास्ता भी पानी में डूब गया था वह अपना रास्ता तलाशता फिर रहा था कभी खेत की मेड़ पर चढ़ता, कभी पेड़ पर जैसे-तैसे वह पानी से बाहर निकली हुई जमीन तक पहुँचा वहाँ से रास्ता कुछ आसान दिखा, तो एक घर में जा घुसा वहाँ एक काली मूँछों वाला आदमी था उसे देखकर वह तुरंत डण्डा ढूँढ लाया और जमीन पर पटकने लगा

‘बाप रे यह बड़ा तो बड़ा खतरनाक हैं किसी को भी बिना बात मार सकता हैं’-सोचकर छोटू साँप सरसराता हुआ पत्थरों के ढेर में घुस गया वहाँ एक साँप पहले से ही मौजूद था छोटू ने उसे काली मूँछों वाले आदमी की हरकत के बारे में बताया उस साँप ने कहा-‘चलो मेरे साथ उसने तुम्हें मारने की कोशिश की, तुम्हें डराया अब देखना मेरा रंग, फन देखकर ही उसके हाथ से डण्डा छूट जाएगा’

दोनों उस घर में पहुँचे तो देखा काली मूँछों वाला आदमी तो वहाँ नहीं था एक लड़की चिमनी के उजाले में बैठी किताब पढ़ रही थी साथी साँप ने छोटू से कहा-‘ चलो उजाले में हमें देखकर ही यह काली मूँछों वाले आदमी को बुलाएगी’ वे दोनों लड़की के सामने आ गए लड़की का नाम नाजिया था आखिर उसकी निगाह पीले और काले साँप पर पड़ गई

साँप तो पहले से ही उसकी ओर देख रहे थे नाजिया बिना हिले डुले बैठी उन्हें देखती रहीं दोनों साँपों को परेशानी होने लगी कि आखिर काली मूँछों वाले आदमी को कब पुकारेगी यह ! उन्हें किसी अजनबी जगह पर इतनी देर ठहरने की आदत नहीं थी वे वापस वहीं पत्थरों में जाकर घुस जाना चाहते थे नाजिया उन्हें बस जादू की तरह एकटक देखे जा रही थी उसके भीतर उन साँपों से डरने का या उन्हें मारने का खयाल ही पैदा नहीं हुआ

‘हमारा यहाँ लौटकर आना अच्छा ही रहा हमने कितने सुंदर और प्यारे से जीव को देखा’ छोटू साँप ने फिर कहा-‘मगर अब चलें मैं काफी थका हूँ सारी शाम पानी भरी जगहों में रास्ता तलाशता रहा था’

‘चलो चलें’ दूसरा साँप बोला उसे छोटू साँप की बात ठीक लगी

नजिया उन दोनों साँपों को चिमनी की रोशनी के दायरे को पारकर अंधेरे में गायब होते देखती रहीं

‘यह मुलाकात भी ठीक रहीं’ उसके होठों की मुस्कान अब यही बात कह रही थीं

प्रभात

नंदन में प्रकाशित

बीरबहूटी

बादल बहुत बरस लिए थे फिर भी बहुत सारा पानी उनमें बचा हुआ था और वे खेतों, जंगलों के ऊपर छाये हुए थे सारा आकाश मेघों से भरा था मेघों की छायाओं में गीली हवाएं इधर-उधर घूम रही थीं पेड़ों के तने अभी भी गीले थे मूंगफलियों के हरे खेतों में पीले फूल अभी भी गीले थे खेतों में छोटा-छोटा बाजरा उगा था बाजरे के पानी सरीखे लम्बे पतले पातों में पानी की बूंदें अटकी हुई थीं बारिश की हवा में गीले खेतों और बारिश की हरियाली की गंध घुली हुई थीं

उन्हें बीरबहूटियों से मिलना होता था सो वे स्कूल के लिए घर से कुछ समय पहले निकल आते थे कस्बे से सटे इन खेतों में बीरबहूटियां खोजा करते थे सुख मुलायम गदबदी बीरबहूटियां धरती पर चलती फिरती खून की प्यारी-प्यारी बूंदें उनके बस्ते उनकी पीठ पर लदे होते थे, कंधों पर टंगे होते थे वे एक-दूसरे के बहुत नजदीक रहकर, बल्कि कहना चाहिए बिल्कुल सटकर बीरबहूटियां खोजते थे उन्हें देखने के लिए बारिश की गंध भरी भूरी जमीन पर बैठ जाया करते थे

‘बेला, देखो इस बीरबहूटी का रंग तुम्हारे रिबन के जैसा लाल है’ साहिल ने कहा
‘लेकिन हम बीरबहूटियों का रंग देखने आए हैं ना कि किसी रिबन का’ बेला ने कहा
‘तुमने कुछ सुना बेला?’

‘हां सुना पहली घंटी लग गई है’

‘लेकिन मुझे पेन में स्याही भी भरवानी है, दुकान से’

उन्नीस सौ इक्यासी का साल राजस्थान में जयपुर के नजदीक सवारी गाड़ियों और मालगाड़ियों से सदा भरा फुलेरा जंक्शन कस्बे की लगभग सूनी तंग गलियां गलियों में खामोश खड़े बिजली के खम्भों खम्भों के बीच खींचे तारों से उलझे मांजे और सद्दे और फटी पतंगें और कबूतरों की कतारें इन गलियों में जहां-तहां दिखाई पड़ते मीठी घंटियां बजाते फेरी वाले एक अंधेरी सी गली में छह-सात गधों के खुरों की टापों की आवाजें उनके पीछे चलता एक उघाड़े बदन कुम्हार इसी दृश्य के बीच से गुजरते हुए दो स्कूली बच्चें बेला और साहिल उन दिनों पेन में पांच पैसे में एक पेन नीली स्याही भरी जाती थीं स्टेशनरी की दुकान वाले ड्रॉपर से पेन में स्याही भरते थे

पेन में कुछ स्याही बची थी उसे साहिल ने जमीन पर छिड़क दिया नयी स्याही भरवाने के लिए दोनों दुकान पर पहुंचे

‘एक पेन स्याही भर दो’ साहिल से पहले ही बेला ने दुकान वाले से कहा

‘बेटा स्याही की बोतल अभी-अभी खाली हो गई है’ अब तो कल ही मिल पाएगी

‘लेकिन इसने तो पेन में जो स्याही थी उसे भी जमीन पर छिड़क दिया’ बेला बोलीं

‘बादल को देखकर घड़े को नहीं ढुलाना चाहिए’ दुकान वाले भैया ने कहा और पूछा
‘कौनसी में पढ़ते हो?’

‘पांचवी में’ साहिल ने ऐसे बुरे मन से बताया जैसे पांचवी में पढ़ना पाप हो

‘दोनों’ दुकान वाले भैया ने कहां

‘हां दोनों और हम दोनों का सेक्शन भी एक ही है—‘ए’, बेला ने ऐसे खुश होकर बताया जैसे यह कोई बहुत बड़ी बात हों

क्लास में दोनों पास-पास बैठते थे कापी में काम करते तो दोनों कापी में काम करते थे किताब पढ़ते तो दोनों किताब पढ़ते बल्कि पाठ भी एक ही पढ़ते साहिल ‘चमक उठी सन् सत्तावन में, वह तलवार पुरानी थी’ पढ़ता तो बेला भी ‘चमक उठी सन् सत्तावन में, वह तलवार पुरानी थी’ पढ़ती थीं

बेला कहती—‘बहन जी पानी पीने चली जाऊं ?’

साहिल भी कहता, ‘बहन जी पानी पीने चला जाऊं ?’

गणित के माटसाब सुरेन्द्र जी का पीरियड खेलघण्टी के बाद आता थां वे खेलघण्टी में भांग पी आते थे बच्चे उनसे कांपते थे और खेल घंटी बंद होने से दो मिनट पहले ही अपनी-अपनी जगह आकर बैठ जाते थे सुरेन्द्र जी माटसाब इसी पीरियड में कापी जांचते थे जरा सी गलती पर बच्चों को इधर-उधर फेंक देते थे या झापड़ पर झापड़ मारने लगते थे उनका हाथ चलना शुरू होता तो रुकना भूल जाता थां

एक दिन सुरेन्द्र जी माटसाब ने बेला के बालों में पंजा फंसायां पर शायद जिस गलती को पाकर वे उसके बाल पकड़ कर फेंकने वाले थे वह गलती थी ही नहीं भांग के नशे में भी उन्हें न जाने कैसे यह दिख गयां उन्होंने बेला को छोड़ दियां बेला के भयभीत चेहरे को देखकर साहिल बुरी तरह डर गया थां उसने देखा कि बेला के पांव अभी भी कांप रहे हैं जैसे वह खड़े-खड़े अभी गिर जाएगीं सुरेन्द्र जी माटसाब ने कापी को उसके बैठने की जगह पर फेंकते हुए कहा—‘बैठ अपनी जगह परं’

बेला का मन बहुत खराब हो गया, ‘माटसाब चाहे मुझे पीट लेते मगर साहिल के सामने नहीं’ वह साहिल के सामने खुद को शर्मिंदा महसूस कर रही थी, क्योंकि वह जानती थी कि वह साहिल की नजर में बहुत अच्छी हैं जब वह उसके पास आकर बैठीं उससे नजर नहीं मिला पायीं

‘बहुत बुरा है ये मोटां’ साहिल ने बेला के कान के पास फुसफुसायां

बेला अभी भी साहिल की तरफ नहीं देख पा रही थीं अपमान होने की वजह से उसके चेहरे पर विषाद के भाव थे

उनकी कक्षा में एक बोरा नाम का लड़का भी पढ़ता थां वह स्कूल का सबसे विराट और विशाल लड़का थां उसके बेडौल और बड़े आकार के कारण ही सब उसे बोरा कहते थे वह भी अपने असली नाम के बजाय इसी नाम को सुनना अधिक पसंद करता थां जैसे ही कोई उसे बोरा कहता, वह मुस्काराता और जोर से कहता—‘बुच्च बुल्ल टन्नं’ इसका उसके लिए क्या अर्थ था कोई नहीं जानता थां उसे मानसिक और शारीरिक दोनों तरह की कोई व्याधि थीं वह चुपचाप एक कोने में बैठा-बैठा बच्चों को मार खाते देखता थां इससे उसे भी मार खाने की इच्छा हो जाती या पता नहीं क्या

होता था, वह सुरेन्द्र जी माटसाब के पास जाकर कहता, 'माटसाब मुझे पीटों' माटसाब की उसे पीटने की हिम्मत नहीं होती थीं वह माटसाब के कान के पास अपना मोटा सा मुंह सटाकर जोर से कहता, 'बुच्च, बुल्ल,टन्न' माटसाब उसे परे धकेलते हुए बेंत लातें फिर उस पर लगातार दस-बीस बेंत बरसातें हर बेंत पर बोरा जोर से हंसता और कहता, 'बुच्च, बुल्ल,टन्न' माटसाब पीटते-पीटते थक जाते और उनके सुंते हुए लम्बे बाल बिखर कर भालू के बालों की तरह हो जातें कक्षा इस दृश्य को ऐसे देखती जैसे कोई रहस्य रोमांच भरी फिल्म चल रही हों इस दौरान बेला और साहिल कई बार एक दूसरे को देखतें उनकी आंखों में प्रसन्नता भरी चमक रहतीं

सुरेन्द्र जी माटसाब का लड़का था बंटी वह भी इसी कक्षा में पढ़ता था बंटी दिनभर बच्चों से यही पूछता रहता था, तुम फारुक के दोस्त हो कि मेरें मेरे हो तो 'अब्बा' फारुक के हो तो 'कट्टा' उससे जो बच्चे अब्बा रहते उनके साथ मिलकर वह फारुक और उसके दोस्तों को पीटने की योजना बनाया करता था एक दिन साहिल ने बंटी को यह कहते हुए सुना कि बेला को खाड़ (बरसाती नाला) में पटकना हैं इस बात से साहिल को बहुत घबराहट हुई अच्छी बात यह रही कि बंटी की यह बात कहने तक ही सीमित रही साहिल ने यह बात बेला को कभी नहीं बतायीं

दीपावली की छुट्टियों के बाद जब स्कूल खुला तो बेला के सिर पर सफेद पट्टी बंधी थीं कोई उसे 'होये होये सफेद पट्टी' कह रहा था तो कोई 'सुल्ताना डाकू' तो कोई क्या कहकर चिढ़ा रहा था

'ये क्या हो गया बेला ?' साहिल ने परेशान होते हुए पूछा

'छत से गिर गई' बेला ने हंसते हुए कहा और कहा, 'बहुत दिन हो गए, आज खेल घण्टी में गांधी चौक में लंगड़ी टांग खेलेंगे'

'नहीं खेलेंगे,तेरे सिर में फिर से लग जाएगी तो ?'

'नहीं लगेगी' बेला ने जिद कीं और वे हमेशा की तरह सारे बच्चों के साथ गांधी चौक की बालू में पूरी खेलघण्टी लंगड़ी टांग खेलें इन बच्चों को अपने चारों ओर खेलते देखकर गांधीजी की मूर्ति ऐसी दिखाई पड़ती जैसे और समय से कुछ अधिक मुस्करा रही हों

रविवार का दिन था साहिल अपने घर में नीम के पेड़ की डाली पकड़ कर झूल रहा था वह एक स्टूल पर चढ़कर झूलता था अचानक यह हुआ कि टूटे स्टूल की एक कील साहिल की पिंडली में लग गई एक इंच गहरा गढ़वा हो गया

उसे सरकारी अस्पताल में पट्टी बंधवाने के लिए ले जाया गया उसने देखा कि दो लोगों को छोड़कर आगे बेला खड़ी हैं सिर में पट्टी बंधवाने आई हैं स्कूल आते जाते हुए और कक्षा में कई दिन तक दो ऐसे बच्चे दिखाई देते रहे जिनमें से एक के सिर पर पट्टी बंधी होती और एक की पिंडली में सफेद पट्टी वाले ये दोनों कहीं पर भी साथ ही दिखाई दें

पांचवी कक्षा का रिजल्ट आ गयां दोनों छठी में आ गएं यह स्कूल पांचवी तक ही थां
'साहिल अब तुम कहां पढ़ोगे ?' बेला ने पूछां
'और तुम कहां पढ़ोगी बेला?' साहिल ने पूछां
'मेरे पापा कह रहे थे कि तुझे राजकीय कन्या पाठशाला में पढ़ाएंगे और तुम ?
'मुझे अगले साल अजमेर भेज देंगे वहां एक हॉस्टल है, घर से दूर उसमें अकेला
रहूंगा'
क्यों साहिल?'
'पता नहीं क्यों ?'
'तो यानी कि अब तुम फुलेरा में ही नहीं रहोगे ?'
'नहीं तुम्हारा रिपोर्ट कार्ड दिखानां'
साहिल बेला का रिपोर्ट कार्ड देख रहा था और बेला साहिल कां आज आखिरी बारी वे
एक दूसरे की कोई चीज को छूकर देख रहे थे
'तुम्हारी आंख में आंसू क्यों आ रहे हैं बेलां'
मुझे क्या पतां' बेला ने डबडबायी आंखों से हंसते हुए कहां
'साहिल की आंखें बीरबहूटी की तरह लाल होने लगीं थीं और उनमें बारिश की बूंदों
सा पानी भर गया थां' बेला कहने लगी, 'मैं चिढ़ाऊं अब तुम्हें ? रोनी सूरत साआहिल,
रोनी सूरत साआहिल'

बारिश की ऋतु आने में डेढ़ महीना बाकी थां लेकिन यह बारिशों से पहले की बारिश
का एक दिन थां आसमान में घटाएं घिरी थीं धूल भरी तेज हवाएं चल रही थीं पानी
बरस रहा थां फुलेरा कस्बे की बादल छाया एक गली में पांचवी से छठी में चली गईं
एक लड़की जा रही थीं उसके भूरे केश बीरबहूटियों के रंग के लाल रिबन से बंधे थे
दूसरी दिशा को जाती एक गली में पांचवी से छठी में गया एक ग्यारह साल का
लड़का जा रहा थां इसकी पिंडली में बीरबहूटी के रंग का सा एक इंच लम्बा चोट का
निशान थां

प्रभात

चकमक में प्रकाश्य

भोर

रात ने पुकारा—‘भोर ! ओ भोर ! देखो तारे डूब गए हैं चांद भी डूब गया हैं मैं जा रही हूं अब तुम आओ और अपना काम देखो’
भोर अंधेरे के उस पार थीं रात की आवाज सुनकर वहीं से बोली—‘अच्छा जाओं कहकर जाने के लिए शुक्रियां’

भोर अंगड़ाई लेते हुए खड़ी हुई चारों ओर दूर-दूर तक लम्बी निगाह डालीं सारा संसार सोया हुआ हैं पहाड़ खर्राटे ले रहा हैं सोये जंगल की सांसें सुनायी दे रही हैं नदी सो रही हैं उसके पानी पर पड़ी अंधेरे की चादर कभी-कभार हिलती है, जब नदी लहरों के हाथ पांव इधर-उधर करती हैं नदी के सपनों में झरने मिलने आ रहे हैं पर सच तो ये है कि झरने नींद में चल रहे हैं झरने सोते तो हैं पर उन्हें नींद में चलने की आदत हैं

तभी हवा के एक ठंडे-मीठे झकोरे ने आकर भोर को छुआं पवन झकोरे से भोर के कुछ केश चेहरे पर आ गए भोर ने केशों को चहरे पर से हटाते हुए कहा—‘तो तुम आ गईं’

‘भोर तो आयी ही हैं मैं तो छा भी गई’ भोर और हवा के बीच में टपकते हुए ओस ने कहा

भोर और हवा ने लम्बी निगाह पसार कर देखा—‘नीले अंधेरे में पृथ्वी के लगभग सभी हिस्सों पर ओस गिरी हुयी है और गिर रही हैं’

‘तो शुरू करें’ कहते हुए भोर और उसके साथी संसार को जगाने के काम में लग गए

ओस को खेतों में लहलहाती हरी-भरी फसलों को जगाने के काम में मजा आता था वह पीले फूलों से भरी हरी सरसों के खेतों में जाकर झरीं इन खेतों में डूबे हुए चांद की कुछ-कुछ रोशनी बाकी थीं तो वह फूलों और चौड़े पत्तों को चुन-चुन कर जगा रही थीं फूल के करीब जाकर कान में पानी की आवाज में फुसफुसाती और फिसलती हुई टप से हरे पत्ते पर जा गिरतीं उधर चट से फूल की आंख खुलती इधर सरसों का पत्ता ठंड से बुदबुदाता—‘आज तो कड़ाके की ठंड हैं’ तभी हवा ने आकर सारे खेतों को हल्के से झकोरे की थपकी लगायीं खेतों को ऐसा लगा जैसे किसी बहुत ही नर्म और बहुत ही कम गर्म चादर उन पर से खींच ली गई हैं सारे खेत एक साथ बुदबुदाए—‘कड़ाके की ठंड है आज तो मारे गए हवा और ओस का रुख अच्छा नहीं हैं भाईयो देखो जरा पाला तो नहीं पड़ने वाला हैं’

खेतों की जमीन ने हरी-भरी फसल से कहा—‘कुछ ही देर की बात हैं सब कुछ ठीक हो जाएंगे फिलहाल सब एक दूसरे से सटकर मजबूत बने रहो अपने साथियों पर नजर रखो एक भी पौधा लड़खड़ाकर गिरने न पाएं सूरज के उगते ही सब ठीक हो जाएंगे कुछ ही देर मजबूत बने रहो भाईयो सूरज की किरणें आ ही रही हैं एक-एक

पौधे का साथ देने सौ-सौ किरणें खड़ी हो जाएंगीं मगर अभी हवा और ओस का मुकाबला करना ही होगा'

हवा और ओस ने ठंड के कहर से उपजा ये हाहाकार सुना तो वे दोनों बड़ी शर्मिंदा हुईं 'लगता है कुछ ज्यादाती जरूर हुई हैं' ओस ने हवा से कहा 'हां यहां ओस कुछ ज्यादा हो गई हैं वरना आम तौर पर ओस से तो बड़े खुश रहते हैं खेत' हवा ने कहा चलो अब हम अलग-अलग दिशाओं में मुड़ जाएं

'पृथ्वी पर रोज एक अच्छी भोर ले आना कोई कम मुश्किल काम नहीं' अफसोस से ऐसा बुदबुदाती हुई हवा और ओस विपरीत दिशाओं में हो गईं

अब ओस सुदूर गेहुंओं के खेतों पर झरीं फिर सारे मैदानों और घासों और फूलों भरी खरपतवार को उसने चीनी के कणों से भी बारीक पानी की झिल्लियों से कुछ-कुछ भिगोयां बड़े वृक्षों पर भी ओस गिरीं वहां उसे मोटी बूंद बनकर गिरना होता बड़े वृक्षों के पत्तों पर जब मोटी बूंदें गिरती तो वे गाय के कान की तरह हिलतें

हवा को सारे जंगल को झकझोर कर जगाने में मजा आता था उसके ऐसा करने से विशाल जंगल से वैसा ही विशाल संगीत गूंजता था पृथ्वी पर जंगल से दूर के बाशिंदें ऐसी बातें करते थे-कहीं जंगल हिल रहा है जंगल के भीतर का दृश्य भी कम अद्भुत नहीं होता जंगली पेड़ों की भारी-भरकम शाखाओं और उनकी टहनियों के झुरमुटों में पक्षियों के अनगिनत घोंसले एक साथ हिलतें सारी चिड़ियायें हिल जातीं चहक-चकह जातीं चारों दिशाओं में कलरव फैल जाता सारे उड़ने वाले डैने चौड़े कर आकाश को उड़ानों से भरते हुए नजर आते

झाड़ियों और बिलों में छिपे रेंगने वाले इस शोर और आहटों से परेशान होकर इधर-उधर सरकते बल खाते हुए जाने लगते सुस्त चौपाए भी उठ-उठकर पानी के डबरों की ओर जाने लगते शेर,भालू,गीदड़,साही,चूहे,बिलाव आदि सब के सब इस तरह सारा जंगल जाग जाता पृथ्वी पर हलचल में खासी बढ़ोतरी हो जाती

भोर के लिए चुनौती का काम था दो पैर वालों को जगाना वे धरती पर घर बनाकर रहते थे घरों के भीतर से कुंदी बंद करके खाटों पर अपने आपको ढंककर सोते थे बहुत मुश्किल से ही कभी मुंह बाहर निकालते थे इन्हें जगाने के लिए भोर ने हवा और ओस को पुकारा-'ओ री हवा! सुनती हो ओ ओस ! इधर चली आओ धरती पर इतनी हलचल पैदा हो चुकी है कि जो अभी भी सो रहे हैं वे यह हलचल सुनकर जग जाएंगे मगर इन दो पैर वालों को कोई हलचल नहीं जगा सकती इनसे तो रात को भी बड़ी भारी शिकायत है अजीब तरह के जीव हैं ये रात को इन्हें सुलाना मुश्किल, भोर में इन्हें जगाना मुश्किल

‘तुम उनके दिमागों में ऐसे घुस जाओ कि उन्हें लगे सुबह हो गई फिर भी वे पड़े ही रहेंगे इसके लिए हम आ रही हैं’ ओस और भोर ने दूर से पुकार कर हवा से कहाँ भोर ने उनकी आवाज सुनी इससे पहले तो वे खुद ही वहाँ पहुँच गईं वे ऐन उन जगहों पर हड़कम्प मचाने लगी जहाँ दो पैर वाले धरती पर जगह—जगह गाँव, शहर और नगर बसा—बसाकर सो रहे थे तीनों ने खूब हड़कम्प मचा लिया फिर भी दो पैर वाले नहीं जगे तो अनुभवी भोर ने कहा—‘लालच ही इन्हें जगा सकता है’ इनके पालतू मुर्गे, मुर्गियों, गाय बैल, भैंस बछड़ों को जगा दो इनकी मीठी नींदों में ऐसे सपने भेजो जिनसे इन्हें अहसास हो कि इनका कितना सारा काम अधूरा पड़ा है काम पूरा नहीं हुआ तो इनकी जिंदगी का क्या होने वाला है, ये सब इन्हें सपनों में अच्छी तरह समझा दो

भोर, हवा और ओस ने देखा कि दुनिया के सभी घरों में दो पैर वालियाँ जाग—जाग कर रोशनी कर रही हैं दो पैर वाले सपनों में चौंक—चौंक जग रहे हैं मगर उनमें से कुछ वापस ओढ़कर सो रहे हैं उनका कुछ नहीं हो सकता

ये भोर का वह समय था जब नीली रोशनाई सिमट रही थीं कहीं दिन हो चुका है वहाँ फैली रोशनी की आहट यहाँ सुनाई दिखाई दे रही थी अब भोर का आखिरी काम रह गया—पहाड़ को जगाना

भोर को कभी समझ में नहीं आया कि पहाड़ को जगाने का जिम्मा किसे दें वह उसकी उम्र का लिहाज करके सोचती—‘सोने दो वैसे भी इसे कहीं जाना तो है नहीं सदियों से इसी तरह पड़ा है इंसानों ने बारूदी धमाके कर—कर के नींद उड़ाने में कोई कमी नहीं छोड़ी तब भी यह अपनी जगह से एक इंच नहीं खिसका सदियों लम्बे समय में तो सैंकड़ों मील लम्बी नदियाँ तक न जाने कितने रास्ते बदल लेती है मगर ये जनाब तो ये जनाब ही हैं पहाड़ जनाब भोर कभी भी पहाड़ से ‘अलभोर की पहली नमस्ते’ से अधिक कुछ नहीं कह पायीं और भोर को कभी नमस्ते का जवाब मिला हो ऐसा किसी को याद नहीं पड़ता

अब बताओं पहाड़ जगे नहीं तो काम कैसे चलें कैसे उसकी चट्टानों में पानी के चश्मे हिरनों की तरह डोलते फिरें पहाड़ों पर इतने पेड़ और घास कैसे उगें नहीं उगें तो दुनिया की सारी भेड़ों और बकरियों का तो बेड़ा ही गर्क हो जाए क्योंकि उनकी तो पहली और आखिरी पसंद पहाड़ ही हैं अगर पहाड़ चौपायों की तरह घूमते होते तो दुनिया की सारी भेड़—बकरियाँ पहाड़ों से शादी करतीं इतने प्रिय हैं उन्हें पहाड़ इसलिए भोर के न कहने पर भी सूरज अपनी जिम्मेदारी समझता है—पहाड़ को जगाना यही वजह है कि वह हर अलभोर पहाड़ के पीछे गुलाबी आंखें चमकाता नजर आता है फिर एक बार पहाड़ को जगाते हुए आने के बाद धरती पर गुलाबी धूप बिखरने के बाद तो वह पूरी तरह आ ही जाता है फिर भोर धरती के तालों, सागरों, महासागरों में डुबकी लगा ही जाती है नहाकर जब बाहर निकलती है और धरती पर चलती है तो किरनों के गुलाबी तलुवों से चट—चट धूप के कल्ले फूटते हैं

प्रभात

चकमक में प्रकाशित

बिना नाम के दोस्त

चार दोस्त शुरू से ही रहे हैं उनमें से एक नाम 'तुम' और दूसरे का नाम 'मैं' शुरू से ही रहा है रात में कहानी सुनते-सुनते ही सो जाने वाले बच्चे भी जानते हैं कि बाकी दो का शुरू से ही कोई नाम नहीं रहा

गुलमोहर की पतली डाली जैसी लाली, आम के पेड़ के खोखल के मुंह वाली बुआ, हुक्के जैसे बाबा, केकड़े जैसे मामा, बैंगन के दूर के रिश्ते की बहन मटर जैसी अपनी चटर-पटर और बिल्ली की दोस्त टिल्ली ही नहीं, देश की राजधानी दिल्ली भी जानती होगी इस छोटी सी बात को कि तुम और मैं कभी कोई काम नहीं करते थे और वह भी इसलिए नहीं कि उनके कोई नाम नहीं थे वे तो काम करते थे और करते थे तो बस करते थे

तुम और मैं की कामचोरी की आदत को कौन नहीं जानता सभी जानते हैं कि यदि कोई काम खुद चलकर उनके पास आता तो वे उसे दूर से ही आता देख लेते और सोचने लगते—'इस काम को कैसे नहीं किया जाए' फिर भी कोई काम उनके पास आता ही जाता तो वे उसे शिकायत कर-करके भगा देते काम बेचारा उनके आगे ऐसे जान छिपाता जैसे शिकारी के आगे झाड़ियों में छुपता-फिरता तीतर इस तरह दुनिया के हर काम के उनके पास से थक-थक कर लौट जाने से तुम और मैं के पास कोई काफी आलस जमा हो गया था अब कोई भी काम वहां से बचकर निकलता जूते हाथ में लेकर चुपचाप बिना आवाज किए धीरे-धीरे तुम और मैं के आलस का क्षेत्र निकल जाने पर ही वह जूते वापस पांवों में पहनता और राहत की सांस लेता धीरे-धीरे तुम और मैं को इस बात का पता चलना बंद हो गया कि उन्हें गुस्सा आता है कि प्यार अच्छा लगाता कि बुरा अंधेरा-अंधेरा सा लगता है कि सवेरा-सवेरा सा उन्हें पता नहीं चल पाता बादल, धुंध, बर्फ और नदी में कोई चीज समान है कि नहीं उनसे दिमाग पर जोर डालकर बताने के लिए कहो तो भी बताएंगे तो क्या मन में शायद इतना सोचें कि बर्फ तो लकड़ी की तरह होती है धुंध लकड़ी को जलाने पर उठने वाले धुएँ के जैसी बस वे इतना ही सोचेंगे आगे सोचेंगे ही नहीं और यह कहकर कि—'क्या पता भाड़ में जाओ आग लगाओ' इधर-उधर देखने लगेंगे

बिना नाम के दोस्त उनके बिल्कुल उलट थे वे इस ऐसी दुनिया में जिसमें एक से एक सुंदर काम है करने के, सारे कामों को एक साथ देखने पर चुनना मुश्किल है कि किस काम को करें किसे छोड़ दें वे अपने करने के लिए काफी सोच विचार करके कोई काम चुनते फिर सोचते कि इसे कैसे किया जाए धीरे-धीरे उन्हें देखना परखना और पहले से ज्यादा अच्छी तरह से सोचना और करना आ गया और काम उन्हें कितना भी मुश्किल लगता वे शिकायत नहीं करते बल्कि यह जानने की कोशिश करते कि आखिर समस्या क्या है धीरे-धीरे उन्होंने इतनी सारी चीजें बना दी कि उन्हें खुद भी उनके नाम मालूम नहीं थे वे खेतों के पास गुजरते तब हवा उन्हें बताती—'ये दूर-दूर तक

फैला हरा-भरा तुमने उगाया हैं' नदी का तट उन्हें बताता कि—'पानी पर तैर रही नाव तुने बनायी हैं' उनके लगाए पेड़ उन्हें बताते कि —'बादल इसलिए नहीं आते कि रेगिस्तान उन्हें पुकारता हैं इसलिए आते हैं कि रेगिस्तान में उन्हें कैसे बुलाया जाए यह तुम जानते हो'

बिना ना के दोस्त जब बारिश में भी खुश थे फिर सर्दियों में भी उनके चेहरे ताजगी से गुनगुनी सफेद दूधिया धूप की तरह खिल रहे थे और आगे चलकर गर्मियों में वे गर्मी को सहने तो कर रहे थे पर उकताहट में चीख चिल्ला नहीं रहे थे तो नाम वाले दोस्तों तुम और मैं ने उनसे आकर कहा—'हमें तुमसे दोस्ती तोड़नी पड़ेगी'

बिना नाम के दोस्तों ने कहा—'क्यों भाई ऐसा क्या कर दिया हमने ?'

तुम झल्लाया—'ये पूछो क्या नहीं कर दिया तुमने'

मैं बरसा—'बारिश की फुहारों का सारा आनंद तुमने ले लियां सर्दी का सारा रोमांच तुमने उठाया'

बिना नाम के दोस्तों ने कहा—'वो तो तुमने भी उठाया ऋतुएं कोई हमारे लिए ही तो नहीं आतीं'

तुम आग बबूला हो गया—'यही तो कहीं कोई चाल है जरूर हमें किसी ऋतु में कुछ महसूस ही नहीं हुआं'

बिना नाम के दोस्तों को एकबार तो लगा जैसे उनसे कोई गलती हुई हैं उनमें से एक ने कहा—तब फिर क्या करें ?

तुम और मैं एक पल के लिए पानी जैसे दिखे, फिर भाप जैसे उड़े और फिर उपस्थित होकर बोले—'कुछ भी नहीं दोस्ती तोड़नी पड़ेगी बस हमें किसी भी ऋतु में अच्छा क्यों नहीं लगां या तो ऋतुओं को तुमने हमारे खिलाफ भड़का दिया है या उन्हें तुमसे कुछ ज्यादा ही प्यार हो गया हैं'

बिना नाम के दोस्त बोले—'हम तुम्हारे लिए क्या करें ?'

तुम ने फट से कह दिया—'दोस्ती रखनी है तो अब से कोई काम नहीं करोगें'

बिना नाम वाले एक ने कहा—'तब क्या करेंगे ?'

मैं चट से बोला—'बैठे रहों'

बिना नाम वाले दूसरे ने कहा—'बैठे-बैठे तो थक जाएंगे काम करते-करते थकेंगे तो बैठना भी अच्छा लगेगा'

मैं सूखी टहनी की तरह सुलग गया, बोला—'तो फिर सो जाओ'

इस पर बिना नाम के दोस्तों के होठों पर गाढी मुस्कान तैर गई वे बोले—'पर ये काम तो नींद का हैं वही आकर हमें सुलाएगी'

इस पर तुम तड़का और मैं गरजा—'दौड़ो भागो कुछ भी करो'

बिना नाम के दोस्त सफेद बर्फ की तरह झर-झर बरसने से लगे—'का करते हुए कितनी दौड़ भाग हमें करनी पड़ती हैं वो तो हम कर ही रहे हैं'

तुम और मैं ने पीछे टटोलां उन्होंने पायाउनके हाथ में उनकी ही निकली हुई पूंछ आ गई हैं यहां खड़े रहने से वह ज्यादा बड़ी लग रही हैं वे पूछ उठा कर भागें बिना नाम के दोस्तों में से एक ने उनके भागने की तेज गति को देखकर कहा—‘वे कितनी तेजी से अपना का कर रहे हैं’ इस पर दूसरे ने कहा—‘और हम कितना धीरें’ वे फिर से उसी काम में जुट गए, जिसे करते—करते उन्हें सुबह से दोपहर और अब सांझ ही हो चली थीं

प्रभात

राजस्थान पत्रिका में प्रकाशित

चिंया जी छियां जी

तुमने साबुनदानी,मसालेदानी,चायदानी,पानदानी,ये सब तो सुना होगा पर मुहावरेदानी कभी नहीं सुना होगा अब सुनने में बाकी ही क्या रहा,हमने कहा—मुहावरेदानी तुमने सुना—मुहावरे दानी जैसे—मसालेदानी से मसाले निकलते हैं,वैसे ही मुहावरे दानी से मुहावरे निकलते हैं हमारे मौहल्ले के छियां जी और चिंया जी की जबान जरा खुल जाए तो समझिए मुहावरे दानी का ढक्कन खुल गया एक सुबह अम्मी जान ने मुझे अण्डे लेने भेजा रास्ते में जरा दूर पर देखा कि बीच सड़क पर छियां जी और चिंया जी की मुहावरे दानियों के ढक्कन खुले पड़े थे मुहावरे दानियों से मुहावरे निकल—निकलकर हवा में उड़ रहे थे अब जो वाकया हुआ सो सुनो

छियां जी चिंया जी पर चिंघाड़ रहे थे—‘अन्धे हो!दिखता नहीं क्या? साइकिल ऊपर चढाए जा रहे हो, चढाए जा रहे हो?’

चिंया जी भी दहाड़ रहे थे—‘आसमान सर पर न उठाओ छियें साइकिल चढा ही देता तो इतना आग बबूला न होतें’

छियां जी को अब भयंकर तैश आ गया बोले—‘तो भैया चिंया क्या राह चलते किसी राहगीर को सरेराह कुचल डालोगे ? ये तो वही मिसल हुई क्या कहते हैं वो उल्टा चोर कोतवाल डांटें’ चिंया जी के सब्र का घड़ा भर गया उन्होंने नहले पर दहला फटकारा— देखिए छियां जी इस तरह आप नाकुछ सी बात को हवा दे रहे हैं बात अब हद से आगे बढ़ चुकी है, पानी सर से गुजरने लगा हैं मैं अब अगर अपनी पर आ गया तो आप जो तूफान मचा रहे हो कहीं दीयों में नहीं दिखोगें टार्च लेकर दूँढने पर भी न नजर आओगे गनीमत इसी में है कि पतली गली से निकल जाइए वरना वो हंगामा खड़ा होगा कि तमाशबीन तमाशा देखेंगे’ छियां जी को ऐसी झिड़की तो कभी उनके अब्बू जान के अब्बू जान ने भी न पिलायी थी बोले—‘ललकरो मत ललकारो मत चिंए खुदा कसम मेरा खून खौल गया तो कोहराम मच जाएगा भलाई इसी में है कि अब तुम रफूचक्कर हो जाओ

चिंया जी ने ऐसी धमकी भरे बाजार में पहली बार सुनी थीं भीड़ अलग से जमा हो गई थीं चारों ओर नजर घुमाने के बाद बोले—‘मैं कहता हूं दफा हो जाओ दफा हो जाओ नहीं तो कयामत आ जाएगी

इतने ही में एक पुलिस वाला सबको हड़काता हुआ उधर आया—‘ऐ हटो सब हटो फौरन क्यों बवाल मचा रक्खा हैं कौन बखेड़ा कर रहा है इधर आंय’

एक ही पल में सारा नजारा बदल गया सब लोग सुरक्षित जगहों की ओर लपकें मैं भी आधा सेर टिण्डे लेकर घर पहुचां भूख लगी थीं घर पहुचते ही खाने पर बैठ गयां मगर खाने की जगह अम्मी जान ने गरमा—गरम डांट खिलायी—‘अरे बेवकूफी के पुतले तुझसे अण्डे मंगवाए थे न कि टिण्डें’

प्रभात

चकमक में प्रकाशित
दो पाठ्यपुस्तकों में

ढीम और बुढ़िया

दो ढीम थें ढीम जानते हो न—खेत की मिट्टी के ढेलें वे अपने खेत में खेल रहे थें पहले एक ढीम लुढ़कता फिर दूसरा ढीम उसे लुढ़क कर पकड़तां

पर ये खेल वे तब खेलते जब उन्हें कोई देख न रहा हों कोई चिड़िया भी नहीं देख रही हों कोई चींटी भी नहीं देख रही हों कोई झाड़ी भी नहीं देख रही हों कोई आदमी भी नहीं देख रहा हों जैसे ही कोई उनकी तरफ देखता—वे लुढ़कना बंद कर देते और पड़े हुए दिखाई देतें

तभी एक भैंस चराने वाली बुढ़िया उधर आई उसने अपनी भैंसे तो पास के पोखर में छोड़ दी थीं अब वह यहाँ खेत की मेड़ पर बबूल की छाया में बैठने आई थीं ढीमों ने देखा कि बुढ़िया देख रही हैं उन्होंने तुरंत खेलना बंद कर दिया और पड़ गए पर बुढ़िया को जाने क्या सूझी वह बबूल की छाया में उसी जगह आकर बैठी जहाँ ये दो ढीम पड़े थें

ढीमों की खेलने की इच्छा अभी भरी नहीं थीं पर उन्हें डर लग रहा था कि बुढ़िया देख लेगीं तब ढीमों ने सोचा—चलो बुढ़िया से बात की जाएं दोनों ढीमों ने एक साथ बुढ़िया से पूछा—बूढ़ी अम्माँ तू कै बरस की है ? बुढ़िया ने समझा ढीम उसकी पढ़ाई लिखाई के बारे में पूछ रहे हैं सोचकर बोली—भैया मैं तो ख बरस की हूँ ढीमों ने कहा—नहीं री हम पूछ रहे हैं तू कितने बरस की है ? बुढ़िया फिर सोचकर बोली—पता नहीं रे जाने सात बरस की हूँ कि जाने सतरह बरस की हूँ

और बुढ़िया को वे दिन याद आए जब वह सात बरस की थी और जब वह सतरह बरस की थीं

ढीमों ने पूछा—बूढ़ी अम्माँ तू कब तक भैंस चराएगी ?

बुढ़िया बोली—जब तक जीऊँगीं

ढीमों ने पूछा—तू कब तक जीएगी ?

बुढ़िया बोली—मेरा वश चले तो मरूँ ही नहीं पर सोचती हूँ एक सौ चार बरस तो जीऊँगी हीं

बुढ़िया ने कहा—तुमने बहुत पूछ लियां अब मैं पूछूँगी—तुम बताओ तुम कितने बरस जीओगे ?

ढीमों ने कहा हम तो मौसम के अनुसार मरते जीते रहते हैं मर जाते हैं फिर जी जाते हैं

बुढ़िया ने पूछा—फिर भी कब तक जीओगे ?

ढीमों ने बताया—अभी तो हम आज शाम तक ही जीएँगे

अचानक बुढ़िया ने मुड़कर देखा तो पता चला सभी भैंसों पोखर से निकलकर दूर चली जा रही हैं वह जीवन—मरण के सवाल को वहीं छोड़ लकड़ी उठाकर भागीं

साँझ हुई आँधी आई फिर मेह आयां ढीम मेह में बरसे पानी में गल गएं

प्रभात

मीशा और नींद

मीशा राय अभी-अभी स्कूल से लौटी थीं उनका स्कूल में रोजना का आना जाना था दरआसल वे वहां पढ़ती थीं नया-नया स्कूल मीशा राय को मार काम-कमा ही काम फैल गया था चारों ओर नयी कापियां बनाना नये स्कूल में नये दोस्त बनाना आदि-आदि ऐसे चार बच्चों की तो लिस्ट भी बन गई थी जो मीशा राय को बिल्कुल भी पसंद नहीं थे उनमें एक तो हिमांशु ही हैं कितनी बार बताया उसे हावड़ा पुल बहुत बड़ा है बोलता है-मीशा-मीशा हावड़ा पुल टोंक रोड़ की पुलिया से कितना बड़ा होगा ? बेवकूफं हुं मीशा राय को राजस्थान के लोगों पर बहुत गुस्सा आ रहा था उन्होंने इसी गुस्से में बस्ता एक ओर फेंका चप्पलें पलंग के नीचे फेंकीं मुंह धोकर आयीं साफ तौलिये से मुंह पोंछा और तुरंत जाकर सो गई

मार काम ही काम फैला है नई जगह पर अब स्कूल का काम करों कि नई जगह पर पसंद के और नापसंद के लोगों के बारे में सोचों स्कूल के नये दोस्तों के बारे में सोचने का काम घर में कॉलोनी के दोस्तों के बारे में सोचने का काम ऊपर से मम्मी की हिदायतें-‘इसके साथ खेलना उसके साथ नहीं खेलना क्यों जी क्यों आप क्या जानती हैं उनके बारे में ? ओहो ये तुम्हारे सोने का समय मीशा तुम क्यों अनर्गल सोचे जा रही हो ‘अनर्गल’ ये अनर्गल शब्द तुम्हारे मुंह से कैसे निकला ओ हां हिन्दी टीचर ने बोला था आज राजस्थान के लोग भी जाने क्या-क्या बोलते हैं अनर्गल मीशा तू आधे घंटे से दूसरी बातें सोचे जा रही हैं सो क्यों नहीं जातीं’ मीशा ने अपने आपको झिड़का कितना तो काम करना है

मीशा को कलकत्ता के कुछ चित्र बनाने हैं वे चित्र क्लास में दिखाने हैं उसने चित्र बनाकर कलकत्ता के बारे में बताने का वादा किया है दोस्तों से हिमांशु को हावड़ा पुल और टोंक रोड़ की पुलिया का फर्क समझाना है इसलिए वह एक घंटे से लेना चाहती है उसके बाद काफी देर जमकर काम करना चाहती है पर नींद आ ही नहीं रही ठीक अब कोई और बात नहीं सोचूंगी तब भी नींद नहीं आयी

कौन ? भीतर घर में से आवाज आयी

मैं हूं मीशा राय क्या वहां नींद है ?

नींद अपने बच्चों ‘सपने और ‘सुख’ को खिला रही थीं चोरी से देख लेने पर मीशा को बहुत मजा आया उसने देखा कि नींद एक मिनिट रुको कहती हुई, दरवाजे की तरफ आ रही है मीशा दरवाजे से छुआये हाथों को हटा कर सावधान खड़ी हो गई गली में अंधेरा था सभी घरों के अंदर लाईट जली होने की रोशनी दरारों से दिख रही थी क्या इन सभी घरों में नींदें रहती हैं मीशा ने सोचा किवाड़ खुलने और ‘क्या ?’ शब्द कानों में पड़ने पर मीशा का ध्यान लौटा उसने देखा नींद सामने खड़ी हुई है

‘आप आयी नहीं ?’ मीशा ने कहा, ‘ मैं आधे घंटे से आपका इंतजार कर रही हूँ बात ययह है कि आज मुझे रात जागकर कुछ चित्र बनाने हैं मैं सोच रही थी शाम में एक घंटे सो लूँ इतना कहने के बाद मीशा ने नींद के घर में झांका वहां क्या-क्या है ?

‘आप वक्त-बेवक्त के सोने वालों ने तो मुझे तंग कर दिया’ नींद के चेहरे पर चिड़चिड़ाहट थीं मीशा इससे सहम गई वह फुसफुसाहते हुए बोली-‘ रोज तो इस वक्त मैं खेलती रहती हूँ तब मैं आपको नहीं बुलातीं आज रात में जग कर चित्र बनाने हैं इसीलिए’

‘याने आप मुझसे यह कह रही हैं मीशा जी कि जब आप रात में चित्र बनाएं तब तो मैं आपके सोने का इंतजार करती रहूँ और अब जबकि मुझे घर में कई काम पड़े हैं, तब आप कह रही हैं कि मैं यह सारे काम छोड़कर आपको सुलाने पहुंच जाऊँ’ नींद ने कहा

मीशा के पास इस बात का कोई जवाब नहीं था वह चुपचाप नींद के चेहरे की ओर देखने लगीं अंधियारा हो गया था नींद ने मीशा के चेहरे को देखा उस पर ससचुमुच परेशानी के भाव थे ‘ठीक है एक मिनिट ठहरों मैं अभी आई’ कहते हुए नींद अंदर गई मीशा ने बाहर खड़े-खड़े सुना-नींद अपने बच्चों ‘सपने’ और सुख से कह रही है-‘देखो मीशा आयी है बुलाने’ सपने और सुख ने नींद की ओर प्रश्न भरी आंखों से देखा मीशा ने देखा तीनों उसकी तरफ ही आ रहे हैं पास आकर नींद ने अंधेरी गली में मीशा से आगे-आगे चलने को कहा नींद सपने और सुख को साथ लिए पीछे-पीछे चल रही थीं मीशा ने महसूस किया कि वह अंधेरे में चल रही हैं पर पैर कहाँ रख रही है उसे खुद पता नहीं चल रहा है उसके पैरों के नीचे न तो जमीन है न हवा न पानी क्या है ?

मैं पन्द्रह मिनिट में वापस आ जाऊँगी मुझे भी तो काम करने होते हैं उसके पीछे-पीछे आती हुई नींद ऐसे बोल रही थीं

प्रभात

जनसत्ता में प्रकाशित

मिट्टी की दीवार

गोबर के घूरे की खंदक में सूअरी ने अपने बारह बच्चे जन दिए गुलाबी रूई के फाहे से नवजातों सबके सब एक दूसरे पर लदे फदे माँ के पेट की गरमाश से चिपकें नये शरीर, नयी लाल त्वचा, नये पैर, नयी आँखें, कभी खुली कभी मुंजीं

उनके लिए यह जगह भी नई थी, रूखी-सूखी इस जगह में उन्हें कभी-कभी बहुत तेज सर्द हवा लगती थीं लम्बे समय तक काली छायायें रहती थी जिसमें वे बहुत कम हिलते डुलते थे या सोये रहते थे लम्बे समय बाद लाल रेशनी फूटती थीं उन्हें आसपास की चीजें दिखायी पड़ने लगती-‘बाड़, कूड़ा कर्कट, पत्थर, सूखी गोबर की खंदक, कुक्कुट, मेमनां

वे अपनी माँ के सिवा किसी हिलडुल और चल फिर सकने वाली चीज से परेशानी अनुभव करते थे कुछ दिनों में तो वे खुद ही चलने फिरने लगें मगर उनके चलने फिरने में अभी वो बात नहीं आयी थीं जो कुक्कुट या मेमने के कहीं भी अपने आप घूमने फिरने में थीं अभी तो जब उनकी माँ धीमी चाल से कहीं भी जा रही होतीं वे बारहों के बारहों उसके पीछे-पीछे फुर्ती कर-कर के दौड़ते

माँ उनकी कम परवाह करती थीं वह सोचती थी कि इस फौज की अगर बहुत परवाह की तो यह उसके बिना कुछ कर ही नहीं पाएंगी उसके बिना कहीं आ जा ही नहीं सकेगीं शायद यही सोचकर उस सुबह उनकी माँ मिट्टी की दीवार कूदकर उस तरफ चली गईं

वे उस दीवार पर चढ़ने की कोशिश में आधे दिन तक गिरते-पड़ते रहें आखिर में वे थककर मिट्टी की दीवार के इस तरफ ही घूमन फिरने लगें इस तरफ अब उनकी सुरक्षा में गाय, कुत्ते और बच्चों को घुर-घुर की घुड़की से डराकर भगा देने वाली माँ नहीं थीं उन्हें खुद ही सोचना था कि कैसे क्या करना है ?

देखना यह है कि अब वे क्या करते हैं जब एक कुतिया धीमी चाल से चलती हुई इधर ही आ रही हैं उसके पीछे-पीछे पिल्लों की फौज दौड़ लगाती धूल उड़ा रही हैं वे सबके सब वहाँ से तुरत-फुरत तितर-बितर हो गए

कुतिया कुछ समय वहाँ रुकी कुछ सूंघती रहीं उसकी नकल में उसके पिल्लों की फौज भी कुछ सूंघती रहीं यहीं वह दीवार थी मिट्टी की जिसे एक दिन सूअरी कूदकर उस तरफ चली गई थीं आज कुतिया उस दीवार को कूद कर जा रही थीं वह फलांग भर कर कूदी और आगे निकल गईं पिल्ले रह गए इस तरफ ही

सूअरी के बच्चे जो कि कोई झाड़ी में छिपा था, कोई बाड़ में, कोई घूरे की खंदक में, कोई पत्थरों में, सब निकल-निकल कर बाहर आ गए तभी वहाँ मेमना और कुक्कुट भी आ गए शायद उनकी भी माँएं मिट्टी की दीवार कूदकर उस तरफ चली गई थीं

प्रभात

बाल-भास्कर में प्रकाशित

रात की हवा

सर्दी की अँधेरी रात में सभी अपने घरों में दुबके थे बाहर सिर्फ ठंडी हवा डोल रही थी आसपास कीड़े—मकोड़ों और पत्तों की सरसराहट थी

हवा का किसी से बातें करने का मन था उसने एक पेड़ की डाली को हिलाया—‘क्या इतनी जल्दी सो गई हो?’ पेड़ की डाली गहरी नींद में थी हवा के छेड़ने पर पूरा पेड़ ही जाग गया बड़बड़ाने लगा—‘क्या तुम्हें मालूम नहीं की पेड़ शाम को ही सो जाते हैं अभी कितनी रात हो गई है कुछ होश है तुम्हें? न खुद सोती हो न दूसरों को साने देती हों’

पेड़ की डाँट सुनकर हवा की तो सिट्टी—पिट्टी गुम हो गई वह चलते—चलते सरसों के खेतों की ओर जा निकलीं दूध जैसी सफेद चाँदनी में सरसों के पीले खेत बहुत सुंदर दिखाई दे रहे थे हवा को यह सब देखकर अच्छा लग रहा था वह अभी चाह रही थी कि कोई उससे बात करें लेकिन फिर उसे पेड़ की डाँट याद आ जाती उसने तय किया अब बात करने के लिए मनुष्यों की दुनिया सबसे ठीक है वहाँ तमाम लोग और प्यारे—प्यारे बच्चे होंगे उनसे बात करके अच्छा लगेगा

आखिर हवा एक कच्चे घर के पास पहुँच गई कच्चे घर के पास जाकर हवा ने लकड़ी के किवाड़ को बजाया लकड़ी का किवाड़ बजा—‘चर्च—चू—चर्च—चू’ हवा ने फिर किवाड़ बजाया—‘चरमर्—चू—चरमर्—चू’ किवाड़ के पास ही कुत्ता सोया था वह पूँछ उठाकर भौंकने लगा—‘भौ—भौ—भौ!’ हवा डर कर एक ओर हो गई वहाँ से उसने देखा कि किवाड़ तो खुले ही पड़े हैं उसने किवाड़ के एक पल्ले को धकेला कुत्ता भी पहले से ज्यादा जोर से भौंकने लगा घर के भीतर सो रही छह महीने की मेहा जगकर रोने लगी घर के मालिक प्रमोद पाठक उठकर बड़बड़ाते हुए बाहर आए वह बोले—‘क्या मजाक है हवा? क्यों बार बार किवाड़ बजा रही हो?’

फिर उन्होंने अँधेरे में ही अपना चश्मा ठीक किया किवाड़ों के पल्लों को हाथ से पकड़कर रोकते हुए बोले—‘अरी हवा! क्या तुम नहीं जानती कि पशु पक्षियों और मनुष्यों की दुनिया दिन के समय जागती है, काम करती है रात के समय सोती है, आराम करती है, जबकि हवा, पानी, आकाश, चाँद, तारे तो कभी नहीं सोते इस बात को सीख लो, रेत की कापी में लिखकर रख लो रात के समय अगर तुम्हें बात करनी है तो जाकर पहाड़ों, नदियों और समंदरों से करो यहाँ कभी दिन में आना यह मेरे आराम का समय है’

ऐसा कहने के बाद प्राइमरी अध्यापक प्रमोद पाठक चश्मे पर से ओस पोंछते हुए घर के भीतर चले गए वहाँ जाकर सो गए

जब प्रमोद बोल रहे थे हवा के मन में कई सवाल उमड़ रहे थे मगर प्रमोद जी तो भीतर जाकर किवाड़ों की आगल लगाकर सो चुके थे अब हवा किवाड़ बजा बजाकर उन्हें वापस तो बुला नहीं सकती थीं वह गुनगुनाती हुई वहाँ से रात में कहीं दूर चली गई

प्रभात

नंदन में प्रकाशित

ऊँट का फूल

फूलों के गाँव में तरह-तरह के फूल थे आक के फूल, अड़सूटा के फूल, कटैड़ी के फूल, आम के फूल, नीम के फूल, बबूल के फूल

आक के फूल की शकल घुँघरू जैसी थीं परदेसी आक के फूल की शकल शहनाई से मिलती थीं इस तरह हरेक फूल में कोई न कोई खूबी थीं कटैड़ी के फूलों को देखकर लगता था जैसे वे पीले पानी के बने हैं बबूल के फूल का रंग देखकर सोने के रंग की याद आ जाती थीं

एक दिन फूलों के गाँव में एक ऊँट आया आक के फूल ने उससे पूछा—‘तुम क्या चीज हो जी ? मैं तो फूलों की दुनिया के सिवा और किसी दुनिया को जानता नहीं तो क्या तुम बताओगे कि तुम किस दुनिया के हो ?’

ऊँट जरा अकबका गया बोला—‘किसी और दुनिया से क्या मतलब है तुम्हारा ? मैं इसी दुनिया का हूँ’
‘इसी दुनिया के हो तो यह बताओ कि तुम किसके फूल हो ?’—आक के फूल ने अगला सवाल पूछा

ऊँट कोई जवाब नहीं दे पाया आक के फूल ने उसे प्यार से कहा—‘देखो तुम बहुत ऊँचे हो तुम अपनी डाली से कहो कि वह तुम्हें थोड़ा नीचे झुका दें ताकि हम आराम से बात कर पायें’

‘मेरी कोई डाली वाली नहीं हैं’ ऊँट ने परेशान होते हुए कहा
‘डाली ही नहीं हैं’ आक के फूल को अचरज हुआ और हँसी आ गई—‘तब तुम किस पर लटक रहे हो ?’

‘मुझे कहीं लटके रहने की कोई जरूरत नहीं है मैं अपने पैरों पर सीधा खड़ा रह सकता हूँ’—ऊँट ने कहा

‘क्या तुम्हारी जड़ों को पैर कहते हैं ?’—फूल ने मामले को समझने के लिए यह सवाल पूछा

‘तुमसे उलझने से तो अच्छा है मैं यहाँ से भाग जाऊँ’—ऊँट ने झल्लाते हुए कहा

फूल ने बहुत प्यार से ऊँट से कहा—‘शायद तुम्हें कुछ बुरा लगा है पर जहाँ तक मैं समझता हूँ धूप अभी इतनी तेज नहीं हुई है कि फूलों को बुरा लगने लगे और वे कुम्हला जाएं क्या तुम किसी वजह से कुम्हला रहे हो ?’

‘हाँ मैं तुम्हारे सवालों से कुम्हला रहा हूँ’—ऊँट ने कहा

‘देखो जो जिस पेड़, पौधे या झाड़ी पर लगा होता है वह उसी का फूल होता है इस तरह तुम बताओ कि तुम किसके फूल हो ?’—फूल को यह अजीब लग रहा था कि दुनिया में कोई किसी का फूल न हो

‘देखो मैं एक ऊँट हूँ कोई फूल नहीं’—ऊँट ने हाँफते हुए कहा
फूल ने कोमलता से समझाया—‘ऊँट हो ? तो तुम ऊँट के फूल हुये अब देखो कैर है
तो कैर के फूल हैं रोहिड़ा है तो रोहिड़ा के फूल हैं इस तरह तुम ऊँट हो तो ऊँट के
फूल हुये कि नहीं ?’

ऊँट को फूल की यह वाली बात सच्ची भी लगी और अच्छी भी उसकी इच्छा हुई
काफिले में जाकर दूसरे ऊँटों को भी यह नई जानकारी दें उसने आक के फूल को
‘फिर मिलेंगे’ कहा और कूदता फलाँगता काफिले में जा पहुँचा जाते ही उसने सबको
बताया कि—‘हम सब ऊँटों के फूलों हैं’
ऊँटों ने कहा—‘यह क्या होता है ?’ और उसकी बात समझने से इंकार कर दिया

प्रभात

चकमक में प्रकाशित